भास्वती

प्रथमो भागः

एकादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(केन्द्रिकपाठ्यक्रमः)

NBCampus

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2019-2020

ISBN 81-7450-471-0

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

प्रथम संस्करण

जनवरी 2006 माघ 1927

पुनर्मुद्रण

जनवरी 2007 पौष 1928

दिसंबर 2007 आश्विन 1929

जनवरी 2008 पौष 1930

दिसंबर 2009 पौष 1931

अप्रैल 2019 चैत्र 1941

PD 15T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ ??.00

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. व्कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी. एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा .....

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *अबिनाश कुल्लू*
सहायक संपादक : *एम. लाल*
उत्पादन उत्पादन अधिकारी : *ए.एम. विनोद कुमार*

चित्रांकन *प्रदीप नायक*

आवरण *आलोक हरि*

NBCampus

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमः। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं

नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी. पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्ष्ये सङ्घटिताया: राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

जनवरी 2019 निदेशकः
नवदेहली राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

NBCampus

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष*, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनिता शर्मा, *पी.जी.टी.*, विवेकानन्द पब्लिक स्कूल, आनन्द विहार, दिल्ली

छविकृष्ण आर्य, *उपप्रधानाचार्य*, केन्द्रीय विद्यालय, सेकेण्ड शिफ्ट, एण्ड्रयूज़ गंज, नयी दिल्ली

जगदीश सेमवाल, *निदेशक*, वी. वी. वी. आई. एस., एण्ड आई. एस. पंजाब विश्वविद्यालय, होशियारपुर, पंजाब

दीप्ति त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पी.एन. झा, *पी.जी.टी.*, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, आदर्श नगर, दिल्ली

योगेश्वर दत्त शर्मा, *रीडर* (सेवानिवृत्त), हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राजेन्द्र मिश्र, *पूर्व कुलपति*, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

सरोज गुलाटी, *पी.जी.टी.*, कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, फेज-III, दिल्ली

सुरेश चन्द्र शर्मा, *प्राचार्य*, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, शक्ति नगर, दिल्ली

सदस्य एवं समन्वयक

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

NCERT Campus

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् केशवचन्द्र दाश, *प्रोफ़ेसर*, हो. ना. वेङ्कटेश शर्मा (मास्ति वेङ्कटेश अय्यङ्गार के सुब्बण्ण के संस्कृत अनुवादक) प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य सामग्री संकलित की गई है।

पुस्तक की योजना-निर्माण से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक समिति के *समन्वयक* व *पूर्व विभागाध्यक्ष*, कृष्ण चन्द्र त्रिपाठी, *प्रवाचक*, उनके विभागीय भाषा शिक्षा विभाग सहयोगी रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* तथा दयाशंकर तिवारी, *प्रोजेक्ट एसोसिएट* साधुवाद के पात्र हैं।

सत्र 2017-18 में पुस्तक के पुनरीक्षण कार्य के समन्वयन के लिए भाषा शिक्षा विभाग के के.सी.त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर*, जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, संगीता शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* को परिषद् साधुवाद करती है। पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए परिषद् पी.एन. शास्त्री, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति*, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, रमेश कुमार पांडेय, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति*, श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, रमेश भारद्वाज, *प्रोफ़ेसर*, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, रंजना अरोड़ा, *प्रोफ़ेसर एवं* विभागाध्यक्ष, डी.सी.एस, एन.सी.ई.आर.टी., आभा झा, *पी.जी.टी.*, संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग हेतु जगदीश चन्द्र काला, जे.पी.एफ., यासमीन अशरफ, जे.पी.एफ. एवं रेखा शर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा) भाषा शिक्षा विभाग, ममता गौड़ संपादक (संविदा), नेहा पाल, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा), प्रकाशन प्रभाग के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

NBCampus

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, ऐसा पाश्चात्य एवं पौरस्त्य सभी विद्वान् मानते हैं। स्वर्गीय बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद की मैत्रायणी-संहिता में वर्णित वसन्त-सम्पात की ज्योतिषीय गणना की और यह सिद्ध किया कि ईसा से लगभग 6500 वर्ष पूर्व ऐसी खगोलीय स्थिति रही होगी।

जर्मनी के प्रख्यात ज्योतिर्विद् हरमन जैकोबी ने भी शतपथ ब्राह्मण में वर्णित कृत्तिका नक्षत्रों की स्थिति का अध्ययन कर, उसे ईसा से 4500 वर्ष प्राचीन सिद्ध किया था। तुर्किस्तान में स्थित बोगाजकोई टीले की खुदाई में प्राप्त, वैदिक देवों (इन्द्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य) के कीलित नामाक्षर से युक्त शिलापट्ट का अध्ययन कर चेकोस्लावाकिया के प्राग विश्वविद्यालय के महान् पुरातत्त्वविद् प्रो. ह्राज्नी ने भी अपनी रिपोर्ट में यह मत व्यक्त किया था कि ईसा से प्रायः दो हज़ार वर्ष पूर्व एशिया माइनर क्षेत्र में वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा विद्यमान थी।

संस्कृत वाङ्मय का विकास वेद, वेदाङ्ग, आर्षकाव्य (रामायण तथा महाभारत) पुराण तथा अभिजात-साहित्य के क्रम से हुआ है। इसी के साथ पालि तथा प्राकृत भाषाएँ भी विकसित होती रही हैं। ईसा की प्रथम शती से चौथी शती के मध्य संस्कृत भाषा साहसी एवं स्वप्नदर्शी (महत्त्वाकांक्षी) भारतीय राजकुमारों तथा उनके निष्ठावान् अमात्यों एवं पुरोहितों के साथ प्रशान्त महासागरीय द्वीप-समूहों में भी पहुँची तथा उन द्वीपों की बोलियों के साथ समन्वित होकर उत्कृष्ट साहित्य की भाषा बनी। सुवर्णद्वीप (जावा तथा बाली), चम्पा (वियतनाम), कम्बुज (कम्बोडिया), कटाह द्वीप (केड्डाह, मलेशिया), श्याम

NBCampus

(थाईलैण्ड) तथा सुवर्णभूमि (म्यांमार) आदि द्वीपों में आज भी संस्कृत अथवा संस्कृतबहुल उन द्वीपों की स्थानीय भाषाओं में अपार मूल्यवान् साहित्य सुरक्षित मिलता है।

वैदिक-साहित्य सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है जो मन्त्रात्मक है। ये मन्त्र मुख्यतः तीन प्रकार के हैं - ऋक्, यजुष् तथा सामन्। जिन मन्त्रों में देवस्तुतियाँ संकलित हैं वे **ऋक्** कहे जाते हैं। इन ऋचाओं का वेद ही **ऋग्वेद** कहा जाता है। इस वेद में 10 मण्डल 85 अनुवाक् तथा 10580 ऋचायें हैं। यज्ञ-याग की प्रक्रिया जिनमें बताई गई है वे मन्त्र **यजुष्** कहे जाते हैं और **याजुष** मन्त्रों का संग्रह **यजुर्वेद** के नाम से विख्यात है। साम का अर्थ है- देवताओं को (संगीतात्मक माधुरी से) प्रसन्न करने वाले मन्त्र-*सामयति प्रीणयति देवान् इति साम*। इन्हीं साममन्त्रों का संग्रह **सामवेद** है।

कालान्तर में महर्षि अथर्वा एवं अंगिरा ने ऐसे अवशिष्ट मन्त्रों का भी एक पृथक् संकलन तैयार किया, जिनमें अनेक लोकोपयोगी विषयों का प्रतिपादन था जैसे-भैषज्य, विषापहार, प्रशासन, आभिचारिक कर्म आदि। यह वेद अपने संकलयिता के ही नाम पर **अथर्ववेद**, आथर्वण-संहिता अथवा अथर्वाङ्गिरस संहिता के नाम से विख्यात हुआ।

इस प्रकार वेद को 'त्रयी' अथवा वेदचतुष्टयी के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त है। वेदों की भाषा अत्यन्त रहस्यमय है। यही कारण है कि विभिन्न सम्प्रदायों तथा दृष्टियों वाले आचार्यों ने वेदमन्त्रों का स्वाभीष्ट अर्थ किया है। यदि आचार्य सायण की दृष्टि इतिहासपरक है तो स्वामी दयानन्द की इतिहासाभावात्मक। इसी प्रकार कुछ आचार्य नैरुक्त दृष्टि के पोषक हैं तो कुछ प्रतीकात्मक दृष्टि के।

जो भी हो, परन्तु इसमें कोई संशय नहीं है कि वेद समस्त विद्याओं का मूलस्रोत हैं। प्रत्यक्ष एवं अनुमान प्रमाणों से भी कथमपि सिद्ध न होने वाले तथ्यों की भी सिद्धि वेद से ही संभव है-

प्रत्यक्षेणाऽनुमित्या वा यस्तूपायो न बुध्यते।
एनं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता॥

वैदिक कविता का स्वर विश्वमंगलात्मक है। सांमनस्यसूक्त में अत्यन्त सरस लोकतांत्रिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। ऋषि

NBCampus

यह संकल्प व्यक्त करता है कि हम एक साथ चलें, एक जैसी वाणी बोलें, एक जैसा चिन्तन करें!

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥

वैदिक ऋषि समस्त इन्द्रियों की अक्षत सामर्थ्य के साथ सौ वर्ष जीने की आकांक्षा व्यक्त करता है तथा देवताओं से प्रार्थना करता है कि वे उसके आयुष्य को मध्यमार्ग में ही खण्डित न करें।

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा
यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति
मा नो मध्या रीरिषत आयुर्गन्तोः॥

इसी प्रकार अभयसूक्त में हमें सम्पूर्ण संसार से निर्भय रहने का संदेश दिया गया है। सारे संसार को स्वयं से भी निर्भय रहने की आश्वस्ति, वेदमन्त्रों में बार-बार दुहराई गयी है। यह कहा गया है कि हम मित्र की दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को देखें-

''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।''

वेदमन्त्रों में विश्वबन्धुत्व की भावना पर बल दिया गया है तथा अनेकता में भी एकता स्थापित की गयी है। सम्पूर्ण विश्व को ही आर्य बनाने (संस्कारसम्पन्न बनाने) का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया गया है। वस्तुतः वैदिक कविता का फलक अत्यन्त विस्तृत है। उसमें प्रकृति के नयनाभिराम दृश्य, सजीव बिम्बयोजनायें, कौटुम्बिक सुखोल्लास, सामाजिक उत्सव तथा राष्ट्रीय योग-क्षेम सब कुछ यथावसर, यथाप्रसंग वर्णित किया गया है।

परवर्ती युग में स्वतन्त्र रूप से विकसित होने वाले समस्त दर्शन एवं शास्त्र वेदमन्त्रों के ही गर्भ से अंकुरित दीखते हैं। एक ओर देवासुर-संग्राम के महानायक इन्द्र के असुर-विरोधी रणाभियानों में प्रतिरक्षाविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण मिलता है तो दूसरी ओर सूर्या-सोम के विवाह-प्रसंग में विवाह-संस्कार का मनोरम चित्रण।

द्यूतकरसूक्त में यदि वैदिकयुग की जनवादी चेतना का साफ-सुथरा वर्णन है तो वाक्सूक्त एवं शिवसंकल्पसूक्त में आध्यात्मिक चेतनाओं का चित्रण।

अथर्ववेद का पृथ्वीसूक्त, इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है जिसमें राष्ट्रदेवता की अवधारणा के दर्शन होते हैं। संभवतः सम्पूर्ण विश्ववाङ्मय में यह प्राचीनतम सन्दर्भ है जिसमें भूमि को वात्सल्यमयी जननी के रूप में प्रस्तुत किया गया है—

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।'

वेदों का वाङ्मय विशाल है। महाभाष्यकार पतंजलि (ई. पू. दूसरी शती) ने अपने महाभाष्य में ऋग्वेद की 21, यजुर्वेद की 101, सामवेद की 1000 तथा अथर्ववेद की 9 शाखाओं का उल्लेख किया, जो सम्भवतः उस युग में उपलब्ध थीं। उनके जीवनकाल में तो गाँव-गाँव में काठक एवं कालापक शाखाएँ पढ़ाई जाती थीं (ग्रामे-ग्रामे काठकं कालापकं प्रोच्यते) परन्तु काल के क्रूर प्रवाह तथा विदेशी आक्रमणों ने ज्ञान-विज्ञान की उस विपुल राशि को विनष्ट कर दिया। परिणामस्वरूप आज मात्र 21 वेद शाखाएँ ही उपलब्ध होती हैं।

वेदों के अनन्तर आर्षकाव्यों- रामायण एवं महाभारत का क्रम आता है। रामायण के आदि प्रणेता महर्षि वाल्मीकि हैं जिन्हें भारतीय परम्परा कथानायक राम का समसामयिक स्वीकार करती है। पौराणिक साक्ष्यों के अनुसार कथानायक राम वर्तमान मन्वन्तर के 24वें त्रेता एवं द्वापर युगों की सन्धिवेला में उत्पन्न हुए थे। वे अयोध्या नरेश दशरथ के पुत्र, राजर्षि विदेह जनक के जामाता तथा भूमिपुत्री सीता के पति थे। उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है, क्योंकि उनके चरित्र में समस्त सामाजिक सम्बन्धों की अन्विति एवं चरितार्थता परिपूर्ण मर्यादा के साथ दीखती है।

रामायण में कुल छः काण्ड तथा 24000 श्लोक हैं। सातवाँ उत्तरकाण्ड, कथा की एकता की दृष्टि से विशृंखलित-सा है, अतएव प्रक्षिप्त भी माना जाता है। रामायण में पदबन्ध की मञ्जुलता के साथ अभिजात संस्कृत कविता का अनेकविध साहित्यिक सौन्दर्य दिखायी